ओमशांति। मीठे व सिकीलधे बच्चों ने अपनी महिमा सुनी। बाप ने समझाया है कि भारत ही पापआत्मा कहलाती है, भारत ही पुण्यआत्मा कहलाती है। भारत ही पतित–पावन को बुलाते हैं। सतयुग में तो पतित होते नहीं। उनको कहा जाता है– स्वर्ग, शिवालय। अभी वैश्यालय है। बड़े नामीग्रामी अजामिल जैसे पाप आत्माएँ रहते हैं। मशहूर है। एक सूरदास की भी कहानी है– सर्प को पकड़ कर ऊपर वैश्याओं पास जाता था। अब ऐसे कोई सर्प को पकड़ कर ऊपर नहीं जाते हैं; परन्तु दिखाते हैं, ऐसे–2 विकारी हैं जो वैश्याओं पिछाड़ी सारा धन–माल खोए देते हैं। बच्चे जानते हैं, यह पाप आत्माओं की भूमि है और भारत में इस समय ही बहुत दान–पुण्य करते हैं। इस समय तुम बच्चे भी बाप को तन–मन–धन, सब कुछ दे देते हो। तुम्हारे आगे मिसाल भी है यह बाबा, जो निमित्त बना है; क्योंकि समझते हैं जैसे कर्म मैं करूँगा, मुझे देख और करने लग पड़ेंगे। तो बाप कहते हैं– मैं इनसे ऐसा कर्म कराता हूँ जो स्वर्ग में भी नम्बरवन बन जाता है; क्योंकि इसने तन–मन–धन दे दिया, जब से ऐसे और फौरन नष्टोमोहा बन गए, अपने बच्चों को वारिस न बनाय इन माताओं को बना दिया, सब कुछ माताओं के हवाले कर दिया, ट्रस्टी बनाय दिया। बोला, यह सब कुछ तुम्हारे हवाले हैं, तुम वारिस बन जाओ। बस, कुछ भी ख्याल नहीं किया। हम तो बाबा के बन जाते हैं। भक्तिमार्ग में जन्म ब जन्म गाते आए– वारी जाऊँ, मेरे तो एक बाबा दूसरा न कोई। तो अब मैं इन माताओं को अपना वारिस बनाता हूँ। इन माताओं द्वारा ही सृष्टि का कल्याण होना है। पहले माता को अपना गुरु बनाय दिया। बस, मेरा तो एक बाबा, दूसरा न कोई। नहीं तो बच्चों आदि में वह तो होता है न; परन्तु एकदम उनसे दिल टूट, बाप से दिल लग गई। बेहद का वर्सा लेना है तो हद का सब कुछ देना पड़े; परन्तु बाप तो दाता है। वह कब लेते नहीं हैं। शिवबाबा देने वाला है। डायरैक्शन देंगे– ऐसे–2 करो, तो यह माता गुरु बन जाए। त्वमेव माताश्च पिता... पहले माता। सतयुग में भी पहले ल० है, फिर ना०; पहले राधा, फिर कृष्ण। फिर जैसे बाप माताओं को उठाते हैं वैसे मेल्स को भी माताओं को उठाना है, उन्हों की सम्भाल करनी है। बेचारी अबलाएँ हैं। दुर्योधनों को विख न मिलने से बहुत मारते हैं। यह ज्ञान नदियाँ हैं। ब्रह्मपुत्र नदी का छोर सागर में होता है। कलकत्ता में ब्रह्मपुत्रा नदी है। शिव जयन्ती पर वहाँ बड़ा भारी मेला लगता है। ब्रह्मपुत्रा नदी–सागर के संगम पर सब यात्रु जाते हैं। वहाँ जाकर स्नान करते हैं। बीच में तो शिवबाबा है ज्ञान सागर और यह ब्रह्मा नदी। अभी तुम आए हो– ब्रह्मा नदी, शिव सागर के मेले पर; परन्तु वह सब हैं ज्ञान की बातें। ज्ञान सागर से तुम निकले हो। ज्ञान स्नान से ही सबका कल्याण होना है। पानी की बात नहीं। यह ब्रह्मपुत्रा (ब्रह्मा) है शिवबाबा की सन्तान (कृष्ण)। तीर्थों का राज़ भी तुम समझते हो– हमारा बुद्धियोग का तीर्थ है। बुद्धियोग लगाते हैं प०पि०प० के साथ। भक्तिमार्ग में तो यहाँ ही माथा मारते हैं, बाप से बुद्धियोग नहीं रहता है। बाप तो एक ही बार आकर मत देते हैं कि मेरे साथ योग लगाओ। ऐसे और कोई तो कह न सके। एक ज्ञान सागर बाप ही कहते हैं। वही सुख का सागर, आनन्द का सागर है। हर एक की महिमा अलग है। ऊँच ते ऊँच भगवान वह पतित–पावन है। वह एक है, पतित दुनिया को पावन बनाने का पार्ट बजा रहे हैं। खुद भी कहते हैं, कल्प–2 आकर सच्चे तीर्थ पर ले जाता हूँ। सब भक्त पुरुषार्थ करते हैं मुक्ति के लिए। सन्यासी निवृत्तिमार्ग वाले मुक्ति कहते हैं। वह तो समझते हैं, सुख कागविष्टा समान है, एक पाई सुख बाकी है। दुःख, स्वर्ग में तो ऐसे नहीं होगा। बाप ने समझाया है– वह निवृत्तिमार्ग का रजोगुणी हद का सन्यास, यह है सतोगुणी हद का सन्यास। हमको तो सारी छीः–2 सृष्टि से बदल, नई सृष्टि में आना है। हम देवता बनते हैं न! लक्ष्मी का आवाहन करते हैं तो कितनी सफाई करते हैं। अभी तो है बेहद की बात। सारी दुनिया ओवरहाल होनी है। 5 तत्व भी तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाते, फिर वहाँ तो नैचुरल वैभव रहते हैं। फूल आदि ही ऐसे होते हैं, घर बैठे ही सुगंध आती। इत्र आदि लगाने की दरकार नहीं। अगरबत्ती की दरकार नहीं रहती। नैचुरल खुशबुएँ रहती हैं। स्वर्ग कहने से ही मुख मीठा

हो जाता है। बुद्धू लोग समझते नहीं, स्वर्ग है। बाप नित कितना अच्छा है। परमात्मा यह लकी सितारे सृष्टि को कितना ऊँच बनाते हैं। तो ऐसे बाप से कितना लव करना चाहिए। प्रॉमिस है बाबा, हम नष्टोमोहा हो आपसे योग लगावेंगे। आपको ही वारिस बनावेंगे। हर एक को अपनी कमाई करनी है। जो कमाई करेगा सो पावेगा। इस दुनिया में मनुष्य जो भी करेंगे, पाप करेंगे। अभी बाप के पास बलि चढ़ने से तुम श्रीमत पर चलेंगे। धन हमेशा पात्र को किया जाता है। अगर कोई शराबी को दान दिया तो फिर उसपर दोष आ जाता है। कपूत बच्चे को दिया तो उसका पाप भी सिर पर आ जाता है। इसलिए सरेण्डर हो हिसाब–किताब चुक्तू करो। सरेण्डर हुए, फिर अलाउ नहीं करेंगे किसको देने लिए। दिया तो पाप हो जाएगा। कन्या को तो देना ही है। अगर स्वर्ग का मालिक नहीं बनती, नर्क में ही गोता खाने चाहती है तो बाप कहते हैं, अभी छोटे–बड़े सभी का मौत है। वह यादव और कौरव अपना प्लैन बना रहे हैं। पांडवों का प्लैन फिर अपना है। जीत तो पांडवों की हुई न। स्थूल लड़ाई की कोई बात नहीं है, यह तो योग और ज्ञान की बात है। जो कुछ शास्त्र आदि पढ़ते हैं उन सबको भूल जाओ। फिर नए सिर बैठ पढ़ो। जीते जी मर कर फिर बच्चा बनेंगे तो वह सब भूल जावेगा। तुम छोटे बच्चे हो। बाप कहते हैं, अब तुम हमारे बन, हमसे सीखो। अपन को छोटा गोद का बच्चा समझो। बच्चों को बाप बैठ पढ़ाते हैं। उनमें छोटे भी हैं, बूढ़े भी हैं। सबको बच्चा बनाय देते हैं और गुरुओं आदि द्वारा जो कुछ सुना है वह भूलते जाओ। हियर नो ईविल, सी नो ईविल। कोई मनुष्य की बात न सुनो। मनुष्य जो कुछ बोलेंगे सो अनराइटियस, रॉंग। सबसे बुरे गुरु लोग कहते हैं– ईश्वर सर्वव्यापी। अरे, बाप सर्वव्यापी तो फिर तुम बाप से वर्सा कैसे लेंगे! फिर तो सब बाप हो गए। शिवोहम्, तत् त्वम् कह देते, वर्से की बात नहीं ठहरती। सबको उल्टा रास्ता बताय डुबोए देते हैं। पतित कौन बनाते हैं? रावण की मत पर चलने वाले गुरु–गोसाई; इसलिए बाप कहते हैं– इन सबको भूलो, माम् एकम् याद करो। आप मरे मर गई दुनिया। समझो, कब्रिस्तान तो बनना ही है। प्रैक्टिकल में यह पुरानी दुनिया खत्म होनी ही है। कब्रिस्तान बनना है, फिर परिस्तान बनेगा। बॉम्ब्स गिरेंगे, सारा कब्रिस्तान बन जावेगा, फिर नया बनेगा। हिरोशिमा अब कितना नया बन गया है। तो यह सारा भारत खास और दुनिया आम कब्रिस्तान होना है। समझो, यह सब मरे पड़े हैं। तो अब परिस्तान, वैकुण्ठ के लिए पुरुषार्थ करना चाहिए। तो बच्चे समझते हो अब बापदादा आए हैं। शिवबाबा ब्रह्मा के रथ पर आय रथी बनते हैं। ऐसे नहीं, कृष्ण कोई अर्जुन का रथी बना। नहीं। प०पि०प० इस रथ पर बैठ सुनाते हैं। बाबा तो बहुत बिज़ी रहते हैं। मैं आया हूँ पतित दुनिया को पावन बनाने तो मुझे कितना रूप धारण करना होता होगा। बहुत बिज़ी रहते होंगे। बाबा तो है ही जागती ज्योत। आत्माओं की ज्योत आकर जगाता हूँ योग से। मेरे साथ योग लगाओ। यह पेट्रोल डालो तो बैटरी जग जावेगी। दीवा बूझ जाता है तो घड़ी–2 घृत डालते हैं। बाबा कहते हैं अब पूरा योग लगाओ। यह तो जानते हो, बाप इस ब्रह्मा के तन से हमको पढ़ाने आया है। भगवानुवाच्य, भगवान क्या कहते हैं– मुझे याद करो। मौत तुम्हारे सिर पर खड़ा है। छोटे–बड़े सबका मौत है। यह है मृत्युलोक। मैं अमरनाथ आया हूँ तुमको अमरकथा सुनाने। तुम पार्वतियाँ अथवा सीताएँ ठहरीं। सब रावण की जेल में, शोक वाटिका में पड़े हो। बाप फिर अशोक वाटिका में ले जाते हैं। वहाँ कोई शोक न रहता। अभी तुम बच्चों को रॉंग–राइट सोचने की बुद्धि मिली है। रॉंग क्या है, राइट क्या है; पुण्य कैसे होता, पाप कैसे होता है– यह तुम जानते हो। योग में रहने से तुम पुण्य आत्मा बनेगी। योग हटा और माया पाप कराय देगी; क्योंकि इस समय माया तमोप्रधान है; इसलिए कदम–2 पर सावधानी चाहिए। श्रीमत पर चलने में कोई नुकसान नहीं। मनुष्य भगवान का कसम उठाते हैं। ये बाप कहते हैं मैं आया हूँ तुमको शिक्षा देने। तुम मेरे बच्चे, प्राणों से प्यारे हो। जानता हूँ तुम बहुत दुःखी बने हो। अब तुमको सुख की दुनिया में ले चलने आया हूँ। सगे और सौतले का राज़ भी समझाया है। सगे पर बाप का ध्यान रहता है। सगे राजाई का वर्सा लेते, लगे प्रजा का वर्सा

लेते। इतनी (भा)री डीटी किंगडम स्थापन हो रही है। तुम राजाई पाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। पहले–2 बात है पवित्रता की। भोग–विकार का विकल्प आया तो कर्म–इन्द्रियों से न करना चाहिए। क्रोध आया, मुख से गुस्सा न करना चाहिए। अगर तुम्हारे में भूत होगा तो लक्ष्मी को वरेंगे कैसे? जिनमें 5 विकार हैं उन्हें बन्दर कहा जाता है। बाबा ने बन्दर के बदले अपनी नलनी बच्ची की(को) दी। टॉक नो ईविल, सी नो ईविल का चित्र बनाया है। उस नलनी बच्ची को बाप ने सेन्टर खोल दिया है। जो कुछ पूँजी थी, सब बेच कर बच्ची को दे दिया। जैसे बाबा ने सब माताओं को दे दिया है वैसे इसने बच्ची को दे दिया है। समझा, यह भी कन्या है, क्यों न इनसे शुभ कार्य कराऊँ! बच्ची ने यह कहा, मैं शादी नहीं करूँगी, वह पैसा इस कार्य में लगा दो। हम पतित दुनिया को पावन बनाने की सर्विस करूँगी। कर्जा लेकर भी बच्ची को सेन्टर खोलकर दिया, खुद भी बैठे हैं। बच्चे भी बैठे हैं। भल बच्चे भी हैं, वारिस बच्ची को बना दिया। तो इनका कितना ऊँच पद हो जावेगा। बहुत ऊँच पद पावेंगे। बहुतों की आशीर्वाद उनके सिर पर आवेगी; क्योंकि गॉडली हॉस्पिटल अथवा गॉडली कॉलेज खोला है। इस समय मनुष्यों की चलन ही ऐसी, जो पैसे सब पाप में लगाय देते। पाप करते और कराते हैं, बिल्कुल ही पाप आत्मा बन पड़े हैं। अब बाप कहते हैं– बच्चे, मेहनत करो। पापों का बोझा बहुत है। निरन्तर याद करने का पुरुषार्थ करो जो अन्त में वह अवस्था रह जाए। सन्यासी भी ऐसे बैठे–2 जाते हैं। हम जाकर ब्रह्म में लीन होते हैं– बस, ऐसे कहते शरीर छोड़ देते हैं। ऐसे भी होते हैं, फिर आस–पास सन्नाटा छा जाता है। यह बाबा अपने अनुभव की बात सुनाते हैं। अनुभव भी होता है। बाप कहते हैं, तुम बच्चे हो सृष्टि की पाप आत्माओं को पुण्य आत्मा बनाने वाले, सच्ची–2 ज्ञान गंगाएँ। गंगा के किनारे पर देवताओं का मंदिर दिखाया है, नाम रख दिया है– गंगा। अब पानी की नदी तो पतित–पावनी हो नहीं सकती, न देवताएँ पतित–पावन हैं। पतित–पावन तो तुम ब्राह्मण हो। उन्होंने गंगा पर देवता का चित्र रख दिया है। देवताएँ तो पतित को पावन नहीं बनाते। मनुष्यों को तो यह ज्ञान नहीं जो कोई से पूछ सके। कहाँ वह पानी की नदी, कहाँ वह देवताएँ! इस समय जो तुम ज्ञान गंगाओं से ज्ञान स्नान करते हैं, वह देवता बन जाते हैं। तुम्हारी सर्विस ही है– मनुष्य से देवता बनाना। **R** यहाँ आत्मा पवित्र बन जाती है। आत्माओं को इंजेक्शन चाहिए। सन्यासी लोग स्नान करने जाते हैं। तुम उनसे जाकर प्रेम से पूछो– गंगा पतित–पावनी है तो गोया तुम पतित हो न! तब तो जाकर स्नान करते हो पावन बनने लिए। तुमको मालूम है, सन्यासी लोग क्या कहते हैं। बोलते हैं– आत्मा पतित होती नहीं, शरीर पतित है। गंगा पतित–पावनी है; परन्तु पाप आत्माओं के स्नान करने से पतित बन जाती है; इसलिए हम पाँव धर गंगा को पावन बनाते हैं। बाबा इन सब बातों का अच्छी रीति अनुभवी है। बाबा के गुरु तो बहुत थे। तुम बच्चों ने इतने गुरु नहीं किए होंगे। पाप आत्मा ही जास्ती गुरु करती है। बहुत रामायण आदि बैठ सुनाते थे। अब तो श्रीमत पर चल रहे हैं। वेद–शास्त्र, ग्रंथ आदि तो पढ़ते आए। मनुष्य कहते हैं, यह वेद–शास्त्र अनादि हैं। बाबा कहते हैं, अनादि किसको कहते हैं? क्या सतयुग से लेकर यह शास्त्र आदि थे नहीं? ड्रामा को अनादि कहा जाता है, बाकी शास्त्र तो बाद में बनते हैं, फिर भी वही बनेंगे। यह सब हैं भारत के शास्त्र। बाबा ने समझाया है– गीता आदि के ये वेद–शास्त्र सब हैं पत्ते। फिर भी वेद–2 करते रहते हैं; क्योंकि गीता का मान कम कर दिया है। वेद तो कुछ भी नहीं दिखाते। वापिस तो कोई जाय न सके। गीता है मात–पिता, बाकी सब उनके बाल–बच्चे। बाल–बच्चों से वर्सा मिल नहीं सकता। तो बाप आकर सच्ची गीता सुनाते हैं। 5000 वर्ष पहले भी यह ज्ञान और योग सिखाया था, अब फिर सीख रहे हैं। भगवान खुद सिखलाय रहे हैं। कहते हैं– 5000 वर्ष पहले भी सिखाया था। जिसको भक्तिमार्ग वाले प्राचीन गीता का ज्ञान और योग कहते हैं, वही फिर मैं सिखाता हूँ। **R** (द्व)ार प्रभु का खुल जाता है न! तुम अभी ईश्वर की गोद

में हो। यह अन्तिम जन्म है, इनके बाद तुम देवता कुल में जाएँगे। अगर पाप का बोझा सिर पर होगा तो आसुरी गोद में जन्म लेंगे। यहाँ स्वर्ग तो है नहीं, बाकी कोई बड़े पवित्र घर में जन्म लेगा जहाँ तुम पावन रहेंगे, उस घर को तुम रोशन करेंगे। बाबा का सर्विसएबुल बच्चा होगा तो उनको कोई ऐसा जन्म थोड़े ही मिलेगा। यहाँ से संस्कार ले जावेंगे तो कुछ कर्तव्य करेंगे, बड़े ऊँच कुल में जन्म मिलता है। विनाश होने बाद थोड़े बचते हैं। उनमें पुण्य आत्मा भी रहते हैं, पाप आत्मा भी रहते हैं। फिर हिसाब–किताब चुक्तू कर सतयुग में तो सब पावन होंगे। संगम पर कुछ पतित, कुछ पावन रहते हैं, फिर पतित खलास हो, फिर पावन ही पावन रहेंगे। अभी तुम सारी सृष्टि को पावन बनाते हो; इसलिए तुम हो सच्चे–2 रूहानी पण्डे। आत्मा की मैल धोई जाती है। बाप कहते हैं, मामेकम् याद करो तो अंत मते सो गते हो जावेगी। 8 को ही पूरी स्कॉलरशिप मिलती है। वह भी नम्बरवार हैं। बाकी 108 को थोड़ी सज़ा खानी पड़ती है। धर्मराज बाबा सा० करावेंगे– तुम वो ही हो न, तुमको कितने समझाते थे फिर भी तुम हमारे सामने पड़ते(पढ़ते) थे। हमारी मत न मानी तो पाप सिर पर चढ़ गया। वहाँ ट्रिब्यूनल बैठती है। सब सा० होते हैं, फिर उसी समय पश्यवानी होती है; परन्तु कर ही क्या सकते! वहाँ रिश्वत आदि चल न सके। धर्मराज है सुप्रीम जस्टिस। सब सा० कराते हैं। **R** बड़े–2 अन्यायी, अजामिल जैसे पापी सब यहाँ होते हैं। बाबा बहुत अनुभवी है। कोई–2 के बच्चे ऐसे गंदे होते हैं, एक वर्ष में एक करोड़ उड़ाय देते हैं। बाप कहते हैं, बड़े अजामिल तो यहाँ बनते हैं, जो यहाँ हमारा बनकर आश्चर्यवत् सुनन्ति, कथन्ति, अहो माया भागन्ति हो जाते हैं; तो समझा जाता है यह बड़ा अजामिल था। बहुत मैला कपड़ा होता है तो उनको सटते–2 फिर फट पड़ते हैं। ऐसे बहुत होते हैं, हुए हैं, बहुत होंगे। बेहद के बाप की मत पर न चलते हैं। बाप कहते हैं, मेरी दाढ़ी को देखो। तुम पवित्र बनो, तुमको पवित्र दुनिया का मालिक बनाऊँगा। पवित्र न बनते तो कहेंगे, ये तो कोई नालायक है। फिर तो धर्मराजपुरी में हड्डी–2 तुड़वाएँगे। कोई तो झट प्रतिज्ञा कर लेते हैं, बल्ड से भी लिख देते हैं, कोई फिर कहते– पुरुषार्थ करूँगा। अरे, बाप कहते हैं अभी प्रतिज्ञा करो। यहाँ से बाहर गया, माया नाक से पकड़ लेती। कोई तो कहते– बाबा, आपकी बात बरोबर ठीक है। कहते हैं, सोच करूँगा। शर्म नहीं आता है! बाबा तो कोई को भी झट नाक से पकड़ लेते हैं। **R** अगर क्रोध का भूत होगा तो फिर स्वर्ग के मालिक कैसे बनेंगे! बाबा ऐसे नहीं कहते, बच्चों आदि की सम्भाल न करो। सब कुछ करो; परन्तु श्रीमत पर। बाबा अच्छे काम में अलाउ करेगा, अगर कुछ पाप कर लिया तो दान करने वाले पर पाप चढ़ जाता है। मज़िल है। श्रीमत पर चलने से ही श्रेष्ठ बनेंगे। श्रीमत से ही विश्व के मालिक बनते हो न! यहाँ प्रतिज्ञा की तो मदद भी मिलेगी। हिम्मते बच्चे, मददे बाप। फट से प्रतिज्ञा करनी होती है। फिर डर रहता है, हमने कसम उठाया है। बच्चा ही न बनेगा तो मदद फिर कहाँ से मिलेगी! सौतेले को थोड़े ही मदद मिलेगी। मातेले को मदद मिलेगी।

चेम्बूर :– तुमको बाप से 21 जन्मों लिए हेल्थ–वेल्थ–हैपीनेस मिलती है, श्रीमत पर चलने से। कोई के पास सिर्फ वेल्थ है, हेल्थ न है, तो वह किस काम का व कोई पास हेल्थ है, वेल्थ न है, तो वो भी क्या काम का! यहाँ तो तुमको सब मिलता है। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को यादप्यार और गुडमॉर्निंग। ओमशांति।